गरुड पुराण सम्पूर्ण कथा

गरूड़ पुराण वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित है और सनातन धर्म में मृत्यु के बाद सद्गति प्रदान करने वाला माना जाता है। गरूड़ पुराण में वष्णु-भक्ति का वस्तार से वर्णन है। भगवान वष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन ठीक उसी प्रकार यहां प्राप्त होता है, जिस प्रकार 'श्रीमद्भागवत' में उपलब्ध होता है इस लये सनातन हिन्दू धर्म में मृत्यु के बाद गरुड़ पुराण के श्रवण का प्रावधान है।

इस पुराण के अ धष्ठातृ देव भगवान वष्णु हैं। इसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार, निष्काम कर्म की महिमा के साथ यज्ञ, दान, तप तीर्थ आदि शुभ कर्मों में सर्व साधारणको प्रवृत्त करने के लये अनेक लौ कक और पारलौ कक फलोंका वर्णन कया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें आयुर्वेद, नीतिसार आदि वषयों के वर्णनके साथ मृत जीव के अन्तिम समय में कये जाने वाले कृत्यों का वस्तार से निरूपण कया गया है। आत्मज्ञान का ववेचन भी इसका मुख्य वषय है।

अठारह पुराणों में गरुड़महापुराण का अपना एक वशेष महत्व है। इसके अ धष्ठातृदेव भगवान वष्णु है। अतः यह वैष्णव पुराण है। गरूड़ पुराण में वष्णु-भक्ति का वस्तार से

वर्णन है। भगवान वष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन ठीक उसी प्रकार यहां प्राप्त होता है, जिस प्रकार 'श्रीमद्भागवत' में उपलब्ध होता है। आरम्भ में मनु से सृष्टि की उत्पत्ति, ध्रुव चरित्र और बारह आदित्यों की कथा प्राप्त होती है।

उसके उपरान्त सूर्य और चन्द्र ग्रहों के मंत्र, शव-पार्वती मंत्र, इन्द्र से सम्बन्धित मंत्र, सरस्वती के मंत्र और नौ शक्तियों के वषय में वस्तार से बताया गया है। इसके अतिरिक्त इस पुराण में श्राद्ध-तर्पण, मुक्ति के उपायों तथा जीव की गति का वस्तृत वर्णन मलता है।

संरचना:

'गरूड़पुराण' में उन्नीस हजार श्लोक कहे जाते हैं, कन्तु वर्तमान समय में उपलब्ध पाण्डु ल पयों में लगभग आठ हजार श्लोक ही मलते हैं। गरुणपुराण के दो भाग हैं- पूर्वखण्ड तथा उत्तरखण्ड। पूर्वखण्ड में २२९ अध्याय हैं (कुछ पाण्डु ल पयों में २४० से २४३ तक अध्याय मलते हैं)। उत्तरखण्ड में अलग-अलग पाण्डु ल पयों में अध्यायों की सख्या ३४ से लेकर ४९ तक है। उत्तरखण्ड को प्रायः 'प्रेतखण्ड' या 'प्रेतकल्प' कहा जाता है। इस प्रकार गरुणपुराण का लगभग ९० प्रतिशत सामग्री पूर्वखण्ड में है और केवल १० प्रतिशत सामग्री उत्तरखण्ड में। पूर्वखण्ड में व वध प्रकार के वषयों का समावेश है जो जीव और जीवन से सम्बन्धित हैं। प्रेतखण्ड मुख्यतः मृत्यु के पश्चात जीव की गति एवं उससे जुड़े हुए कर्मकाण्डों से सम्बन्धित है।

सम्भवतः गरुणपुराण की रचना अग्निपुराण के बाद हुई। इस पुराण की सामग्री वैसी नहीं है जैसा पुराण के लए भारतीय साहित्य में व र्णत है। इस पुराण में व र्णत जानकारी गरुड़ नेण वष्णु भगवान से सुनी और फर कश्यप ऋ ष को सुनाई।

पहले भाग में वष्णु भक्ति और उपासना की व धयों का उल्लेख है तथा मृत्यु के उपरान्त प्रायः 'गरूड़ पुराण' के श्रवण का प्रावधान है। दूसरे भाग में प्रेत कल्प का वस्तार से वर्णन करते हुए व भन्न नरकों में जीव के पड़ने का वृत्तान्त है। इसमें मरने के बाद मनुष्य की क्या गति होती है, उसका कस प्रकार की योनियों में जन्म होता है, प्रेत योनि से मुक्त कैसे पाई जा सकती है, श्राद्ध और पतृ कर्म कस तरह करने चाहिए तथा नरकों के दारूण दुख से कैसे मोक्ष प्राप्त कया जा सकता है आदि का वस्तारपूर्वक वर्णन प्राप्त होता है।

गरुड़ पुराण - पहला अध्याय

(भगवान वष्णु तथा गरुड़ के संवाद में गरुड़ पुराण - पापी मनुष्यों की इस लोक तथा परलोक में होने वाली दुर्गति का वर्णन, दश गात्र के पण्डदान से यातना देह का निर्माण।)

धर्म ही जिसका सुदृढ मूल है, वेद जिसका स्कन्ध(तना) है, पुराण रूपी शाखाओं से जो समृद्ध है, यज्ञ जिसका पुष्प है और मोक्ष जिसका फल है, ऎसे भगवान मधुसूदन रूपी पादप - (जैसे वृक्ष सबको आश्रय देता है, वैसे ही भगवान भी अपने चरणार वन्द में आश्रय देकर सबकी रक्षा करते हैं इसी लए भगवान मधूसूदन को यहां पादप - वृक्ष की उपमा दी गई है) कल्पवृक्ष की जय हो। देव - क्षेत्र नै मषारण्य में स्वर्ग लोक की प्राप्ति की कामना से शौनकादि ऋ षयों ने एक बार सहस्त्रवर्ष में पूर्ण होने वाला यज्ञ प्रारम्भ कया।

एक समय प्रात:काल के हवनादि कृत्यों का सम्पादन कर के उन सभी मुनियों ने सत्कार कए गये आसनासीन सूत जी महाराज से आदरपूर्वक यह पूछा -

ऋषय ऊचु:

ऋ षयों ने कहा - हे सूत जी महाराज्! आपने सुख देने वाले देवमार्ग का सम्यक निरूपण कया है। इस समय हम लोग भयावह यममार्ग के वषय में सुनना चाहते हैं। आप

सांसारिक दुखों को और उस क्लेश के वनाशक साधन को तथा इस लोक और परलोक के क्लेशों को यथावत वर्णन करमें समर्थ है, अत: उस का वर्णन कीजिए।

सूत उवाच

सूतजी बोले - हे मुनियों! आप लोग सुनें! मैं अत्यन्त दुर्गम यममार्ग के वषय में कहता हूँ, जो पुण्यात्मा जनों के लए सुखद और पा पयों के लए दु:खद है। गरुड़ जी के पूछने पर भगवान वष्णु ने उनसे जैसा कुछ कहा था, मैं उसी प्रकार आप लोगों के संदेह की निवृत्ति के लए कहूँगा। कसी समय वैकुण्ठ में सुखपूर्वक वराजमान परम गुरु श्रीहरि से वनतापुत्र गरुड़ जी ने वनय से झुककर पूछा।

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे देव! आपने भक्ति मार्ग का अनेक प्रकार से मेरे समक्ष वर्णन कया है और भक्तों को प्राप्त होने वाली उत्तम गति के वषय में भी कहा है। अब हम भयंकर यम मार्ग के वषय में सुनना चाहते हैं। हमने सुना है क आपकी भक्ति से वमुख प्राणी वहीं नरक में जाते हैं। भगवान का नाम सुगमतापूर्वक लया जा सकता है, जिह्वा प्राणी के अपने वश में है तो भी लोग नरक में जाते हैं, ऐसे अधम मनुष्यों को बार-बार धक्कार है। इस लए हे भगवान! पा पयों को जो गति प्राप्त होती है तथा यम मार्ग में जैसे वे अनेक प्रकार के दु:ख प्राप्त करते हैं, उसे आप मुझसे कहें।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - हे पक्षीन्द्र! सुनो, मैं उस यममार्ग के वषय में कहता हूँ, जिस मार्ग से पापीजन नरक की यात्रा करते हैं और जो सुनने वालों के लये भी भयावह है।

हे ताक्ष्र्य! जो प्राणी सदा पाप परायण है, दया और धर्म से रहित हैं, जो दुष्ट लोगों की संगति में रहते हैं, सत्-शास्त्र और सत्संगति से वमुख है, जो अपने को स्वयं प्रतिष्ठित मानते हैं, अहंकारी हैं तथा धन और मान के मद से चूर हैं, आसुरी शक्ति को प्राप्त हैं तथा दैवी सम्पत्ति से रहित हैं, जिनका चत्त अनेक वषयों में आसक्त होने से भ्रान्त हैं, जो मोह के जाल में फंसे हैं और कामनाओं के भोग में ही लगे हैं, ऐसे व्यक्ति अप वत्र नरक में गरते हैं. जो लोग ज्ञानशील हैं, वे परम गति को प्राप्त होते हैं। पापी मनुष्य दु:खपूर्वक यम

यातना प्राप्त करते हैं। पा पयों को इस लोक में जैसे दु:ख की प्राप्ति होती है और मृत्यु के पश्चात वे जैसी यम यातना को प्राप्त होते हैं, उसे सुनो।

यथोपार्जित पुण्य और पाप के फलों को पूर्व में भोगकर कर्म के सम्बन्ध से उसे कोई शारीरिक रोग हो जाता है। आ ध (मान सक रोग) और व्या ध (शारीरिक रोग) - से युक्त तथा जीवन धारण करने की आशा से उत्कण्ठित उस व्यक्ति की जानकारी के बिना ही सर्प की भाँति बलवान काल उसके समीप आ पहुँचता है। उस मृत्यु की सम्प्राप्ति की स्थिति में भी उसे वैराग्य नहीं होता. उसने जिनका भरण-पोषण कया था, उन्हीं के द्वारा उसका भरण-पोषण होता है, वृद्धावस्था के कारण वकृत रूप वाला और मरणा भमुख वह व्यक्ति घर में अवमाननापूर्वक दी हुई वस्तुओं को कुत्ते की भाँति खाता हुआ जीवन व्यतीत करता है।
वह रोगी हो जाता है, उसे मन्दाग्नि हो जाती है और उसका आहार तथा उसकी सभी चेष्टाएँ कम हो जाती हैं। प्राण वायु के बाहर निकलते समय आँखें उलट जाती हैं, ना ड़याँ कफ से रुक जाती हैं, उसे खाँसी और श्वास लेने में प्रयत्न करना पड़ता है तथा कण्ठ से घुर-घुर से शब्द निकलने लगते हैं।

 चन्तामग्न स्वजनों से घिरा हुआ तथा सोया हुआ वह व्यक्ति कालपाश के वशीभूत होने के कारण बुलाने पर भी नहीं बोलता। इस प्रकार कुटुम्ब के भरण-पोषण में ही निरन्तर लगा रहने वाला, अजितेन्द्रिय व्यक्ति अन्त में रोते बिलखते बन्धु-बान्धवों के बीच उत्कट वेदना से संज्ञाशून्य होकर मर जाता है। हे गरुड़ ! उस अन्तिम क्षण में प्राणी को व्यापक दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है, जिससे वह लोक-परलोक को एकत्र देखने लगता है। अत: च कत होकर वह कुछ भी नहीं कहना चाहता। यमदूतों के समीप आने पर भी सभी इन्द्रियाँ वकल हो जाती हैं, चेतना जड़ीभूत हो जाती है और प्राण चलायमान हो जाते हैं।

आतुरकाल में प्राण वायु के अपने स्थान से चल देने पर एक क्षण भी एक कल्प के समान प्रतीत होता है और सौ बिच्छुओं के डंक मारने जैसी पीड़ा होती है, वैसी पीड़ा का उस समय उसे अनुभव होने लगता है। वह मरणासन व्यक्ति फेन उगलने लगता है और उसका मुख लार से भर जाता है। पापीजनों के प्राणवायु अधोद्वार (गुदामार्ग) से निकलते हैं।

उस समय दोनों हाथों में पाश और दण्ड धारण कये, नग्न, दाँतों को कटकटाते हुए क्रोधपूर्ण नेत्र वाले यम के दो भयंकर दूत समीप में आते हैं। उनके केश ऊपर की ओर उठे होते हैं, वे कौए के समान काले होते हैं और टेढ़े मुख वाले होते हैं तथा उनके नख आयुध

की भाँति होते हैं। उन्हें देखकर भयभीत हृदयवाला वह मरणासन्न प्राणी मल-मूत्र का वसर्जन करने लगता है।

अपने पाँच भौतिक शरीर से हाय-हाय करते हुए निकलता हुआ तथा यमदूतों के द्वारा पकड़ा हुआ वह अंगुष्ठमात्र प्रमाण का पुरुष अपने घर को देखता हुआ यमदूतों के द्वारा यातना देह से ढक कर के गले में बलपूर्वक पाशों से बाँधकर सुदूर यममार्ग यातना के लए उसी प्रकार ले जाया जाता है, जिस प्रकार राजपुरुष दण्डनीय अपराधी को ले जाते हैं। इस प्रकार ले जाये जाते हुए उस जीव को यम के दूत तर्जना कर के डराते हैं और नरकों के तीव्र भय का पुन: - पुन: वर्णन करते हैं - (सुनाते हैं)।

यमदूत कहते हैं - रे दुष्ट ! शीघ्र चल, तुम यमलोक जाओगे। आज तुम्हें हम सब कुम्भीपाक आदि नरकों में शीघ्र ही ले जाएँगे।

इस प्रकार यमदूतों की वाणी तथा बन्धु-बान्धवों का रुदन सुनता हुआ वह जीव जोर से हाहाकार करके वलाप करता है और यमदूतों के द्वारा प्रता ड़त कया जाता है। यमदूतों की तर्जनाओं से उसका हृदय वदीर्ण हो जाता है, वह काँपने लगता है, रास्ते में कुत्ते काटते हैं और अपने पापों का स्मरण करता हुआ वह पी ड़त जीव यममार्ग में चलता है।

भूख और प्यास से पी ड़त होकर सूर्य, दावाग्नि एवं वायु के झोंको से संतृप्त होते हुए और यमदूतों के द्वारा पीठ पर कोड़े से पीटे जाते हुए उस जीव को तपी हुई बालुका से पूर्ण तथा वश्राम रहित और जल रहित मार्ग पर असमर्थ होते हुए भी बड़ी कठिनाई से चलना पड़ता है। थककर जगह-जगह गरता और मूर्च्छित होता हुआ वह पुन: उठकर पापीजनों की भाँति अन्धकारपूर्ण यमलोक में ले जाया जाता है।

दो अथवा तीन मुहूर्त्त में वह मनुष्य वहाँ पहुँचाया जाता है और यमदूत उसे घोर नरक यातनाओं को दिखाते हैं। मुहूर्त मात्र में यम को और नारकीय यातनाओं के भय को देखकर वह व्यक्ति यम की आज्ञा से आकाश मार्ग से यमदूतों के साथ पुन: इस लोक (मनुष्यलोक) में चला आता है। मनुष्य लोक में आकर अबादि वासना से बद्ध वह जीव देह में प्र वष्ट होने की इच्छा रखता है, कंतु यमदूतों द्वारा पकड़कर पाश में बाँध दिये जाने से भूख और प्यास से अत्यन्त पी ड़त होकर रोता है।

हे ताक्ष्र्य ! वह पातकी प्रा ण पुत्रों से दिए हुए पण्ड तथा आतुर काल में दिए हुए दान को प्राप्त करता है तो भी उस नास्तिक को तृप्ति नहीं होती। पुत्रादि के द्वारा पा पयों के उद्देश्य से कए गये श्राद्ध, दान तथा जलांज ल उनके पास ठहरती नहीं। अत: पण्डदान का भोग करने पर भी वे क्षुधा से व्याकुल होकर यममार्ग में जाते हैं। जिनका पण्डदान नहीं होता, वे प्रेतरूप में होकर कल्पपर्यन्त निर्जन वन में दु:खी होकर भ्रमण करते रहते हैं।

सैकड़ो करोड़ कल्प बीत जाने पर भी बिना भोग कए कर्म फल का नाश नहीं होता और जब तक वह पापी जीव यातनाओं का भोग नहीं कर लेता, तब तक उसे मनुष्य शरीर भी प्राप्त नहीं होता। हे पक्षी! इस लए पुत्र को चाहिए क वह दस दिनों तक प्रतिदिन पण्डदान करे। हे प क्षश्रेष्ठ! वे पण्ड प्रतिदिन चार भागों में वभक्त होते हैं।

उनमें दो भाग तो प्रेत के देह के पंचभूतों की पुष्टि के लए होते हैं, तीसरा भाग यमदूतों को प्राप्त होता है और चौथे भाग से उस जीव को आहार प्राप्त होता है। नौ रात-दिनों में पण्ड को प्राप्त करके प्रेत का शरीर बन जाता है और दसवें दिन उसमें बल की प्राप्ति होती है। हे खग! मृत व्यक्ति के देह के जल जाने पर पण्ड के द्वारा पुन: एक हाथ लंबा शरीर प्राप्त होता है, जिसके द्वारा वह प्राणी यमलोक के रास्ते में शुभ और अशुभ कर्मों के फल को भोगता है।

पहले दिन जो पण्ड दिया जाता है, उससे उसका सर बनता है, दूसरे दिन के पण्ड से ग्रीवा - गरदन और स्कन्ध(कन्धे) तथा तीसरे पण्द से हृदय बनता है। चौथे पण्ड से पृष्ठभाग (पीठ), पाँचवें से ना भ, छठे तथा सातवें पण्द से क्रमश: कटि (कमर) और गुह्यांग उत्पन्न होते हैं।

आठवें पण्द से ऊरु (जाँघें) और नवें पण्ड से जानु (घुटने) तथा पेर बनते हैं। इस प्रकार नौ पण्डों से देह को प्राप्त कर के दसवें पण्द से उसकी क्षुधा और तृषा - (भूख-प्यास) ये दोनों जाग्रत होती हैं। इस पण्डज शरीर को प्राप्त कर के भूख और प्यास से पी ड़त जीव ग्यारहवें तथा बारहवें - दो दिन भोजन करता है। तेरहवें दिन यमदूतों के द्वारा बन्दर की तरह बँधा हुआ वह प्राणी अकेला उस यममार्ग में जाता है। हे खग! मार्ग में मलने वाली वैतरणी को छोड़कर यमलोक के मार्ग की दूरी का प्रमाण छियासी हजार योजन है।

वह प्रेत प्रतिदिन रात-दिन में दो सौ सैंतालीस योजन चलता है। मार्ग में आये हुए इन सोलह पुरों (नगर) को पार कर के पातकी व्यक्ति धर्मराज के भवन में जाता है. 1) सौम्यपुर, 2) सौरिपुर, 3) नगेन्द्र भवन, 4) गन्धर्वपुर, 5) शैलागम, 6) क्रौंचपुर, 7) क्रूरपुर, 8) व चत्रभवन, 9) बह्वापदपुर, 10) दु:खदपुर, 11) नानाक्रन्दपुर, 12) सुतप्तभवन, 13) रौद्रपुर, 14) पयोवर्षणपुर, 15) शीताढ्यपुर तथा 16) बहुभीतिपुर को पार करके इनके आगे यमपुरी में धर्मराज का भवन स्थित है। यमराज के दूतों के पाशों से बँधा हुआ पापी जीव रास्ते भर हाहाकार करता - रोता हुआ अपने घर को छोड़ करके यमपुरी को जाता है।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "पा पयों के इस लोक तथा परलोक के दु:ख का निरुपण" नामक पहला अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - दूसरा अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! यमलोक का मार्ग कस प्रकार दु:खदायी होता है। पापी लोग वहाँ कस प्रकार जाते हैं, वह मुझे बताइये।

श्रीभगवानुवाच

श्री भगवान बोले - हे गरुड़ ! महान दुख प्रदान करने वाले यममार्ग के वषय में मैं तुमसे कहता हूँ, मेरा भक्त होने पर भी तुम उसे सुनकर काँप उठोगे। यममार्ग में वृक्ष की छाया नहीं है, जहाँ प्राणी वश्राम कर सके। उस यममार्ग में अन्न आदि भी नहीं हैं, जिनसे क वह अपने प्राणों की रक्षा कर सके? हे खग ! वहाँ कहीं जल भी नहीं दिखता, जिसे अत्यन्त तृषातुर वह जीव पी सके। वहाँ प्रलयकाल की भाँति बारहों सूर्य तपते रहते हैं। उस मार्ग में जाता हुआ पापी कभी बर्फीली हवा से पी ड़त होता है तथा कभी काँटे चुभते हैं और कभी महा वषधर सर्पों के द्वारा डसा जाता है। वह पापी कहीं संहों, व्याघ्रों और भयंकर कुत्तों द्वारा खाया जाता है, कहीं बिच्छुओं द्वारा डसा जाता है और कहीं उसे आग से जलाया जाता है। तब कहीं अति भयंकर महान अ सपत्रवन नामक नरक में वह पहुँचता है, जो दो हजार योजन वस्तारवाला कहा गया है।

वह वन कौओं, उल्लुओं, वटों (पक्षी वशेषों), गीधों, सरघों तथा डाँसों से व्याप्त है। उसमें चारों ओर दावाग्नि व्याप्त है, अ सपत्र के पत्तों से वह जीव उस वन में छिन्न- भन्न हो जाता है। कहीं अंधे कुएँ में गरता है, कहीं वकट पर्वत से गरता है, कहीं छुरे की धार पर चलता है तो कहीं कीलों के ऊपर चलता है। कहीं घने अन्धकार में गरता है, कहीं उग्र (भय उत्पन्न करने वाले) जल में गरता है, कहीं जोंको से भरे हुए कीचड़ में गरता है तो कहीं जलते हुए कीचड़ में गरता है।

कहीं तपी हुई बालुका से व्याप्त और कहीं धधकते हुए ताम्रमय मार्ग, कहीं अंगार की रा श और कहीं अत्य धक धुएँ से भरे हुए मार्ग पर उसे चलना पड़ता है। कहीं अंगार की वृष्टि होती है, कहीं बिजली गरने के साथ शलावृष्टि होती है, कहीं रक्त की, कहीं शस्त्र की और कहीं गर्म जल की वृष्टि होती है। कहीं खारे कीचड़ की वृष्टि होती है, मार्ग में कहीं गहरी खाई है, कहीं पर्वत- शखरों की चढ़ाई है और कहीं कन्दराओं में प्रवेश करना पड़ता है।

वहाँ मार्ग में कहीं घना अंधकार है तो कहीं दु:ख से चढ़ी जाने योग्य शलाएँ हैं, कहीं मवाद, रक्त तथा वष्ठा से भरे हुए तालाब हैं। यम मार्ग के बीचोबीच अत्यन्त उग्र और घोर वैतरणी नदी बहती है। वह देखने पर दु:खदायिनी हो तो क्या आश्चर्य? उसकी वार्ता ही भय पैदा करने वाली है। वह सौ योजन चौड़ी है, उसमें पूय (पीब-मवाद) और शो णत (रक्त) बहते रहते हैं। हड् डयों के समूह से तट बने हैं अर्थात उसके तट पर हड् डयों का ढेर लगा रहता है। माँस और रक्त के कीचड़ वाली वह नदी दु:ख से पार की जाने वाली है।

अथाह गहरी और पा पयों द्वारा दु:खपूर्वक पार की जाने वाली यह नदी केशरूपी सेवार से भरी होने के कारण दुर्गम है। वह वशालकाय ग्राहों (घ ड़यालों) से व्याप्त है और सैकड़ो प्रकार के घोर प क्षयों से आवृत है। हे गरुड़ ! आये हुए पापी को देखकर वह नदी ज्वाला और धूम से भरकर कड़ाह में रखे घृत की भाँति खौलने लगती है। वह नदी सूई के समान मुख वाले भयानक कीड़ो से चारों ओर व्याप्त है। वज्र के समान चोंच वाले बड़े-बड़े गीध एवं कौओं से घिरी हुई है।

वह नदी शशुमार, मगर, जोंक, मछली, कछुए तथा अन्य मांसभक्षी जलचर - जीवों से भरी पड़ी है। उसके प्रवाह में गरे हुए बहुत से पापी रोते- चल्लाते हैं और हे भाई! हा पुत्र! हा तात! - इस प्रकार कहते हुए बार-बार वलाप करते हैं। भूख और प्यास से व्याकुल होकर पापी जीव रक्त का पान करते हैं। वह नदी झागपूर्ण रक्त के प्रवाह से व्याप्त, ममहाघोर,

अत्यन्त गर्जना करने वाली, देखने में दु:ख पैदा करने वाली तथा भयावह है। उसके दर्शन मात्र से पापी चेतनाशून्य हो जाते हैं।

बहुत से बिच्छू तथा काले सर्पों से व्याप्त उस नदी के बीच में गरे हुए पा पयों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। उसके सैकड़ों, हजारों भँवरों में पड़कर पापी पाताल में चले जाते हैं। क्षण भर पाताल में रहते हैं और एक क्षण में ही ऊपर चले आते हैं।

हे खग! वह नदी पा पयों के गरने के लए ही बनाई गई है। उसका पार नहीं दिखता। वह अत्यन्त दु:खपूर्वक तरने योग्य तथा बहुत दु:ख देने वाली है।

इस प्रकार बहुत प्रकार के क्लेशों से व्याप्त अत्यन्त दु:खप्रद यममार्ग में रोते- चल्लाते हुए दु:खी पापी जाते हैं। कुछ पापी पाश से बँधे होते हैं और कुछ अंकुश में फंसाकर खींचे जाते हैं, और कुछ शस्त्र के अग्र भाग से पीठ में छेदते हुए ले जाये जाते हैं। कुछ नाक के अग्र भाग में लगे हुए पाश से और कुछ कान में लगे हुए पाश से खीचे जाते हैं। कुछ काल पाश से खींचे जाते हैं और कुछ कौओं से खींचे जाते हैं।

वे पापी गरदन, हाथ तथा पैर में जंजीर से बँधे हुए तथा अपनी पीठ पर लोहे के भार को ढोते हुए मार्ग पर चलते हैं। अत्यन्त घोर यमदूतों के द्वारा मुद्गरों से पीटे जाते हुए वे मुख से रक्त वमन करते हुए तथा वमन कये हुए रक्त को पुन: पीते हुए जाते हैं। उस समय अपने दुष्कर्मों को सोचते हुए प्राणी अत्यन्त ग्लानि का अनुभव करते हैं और अतीव दु: खत होकर यमलोक को जाते हैं।

इस प्रकार यममार्ग में जाता हुआ वह मन्दबु द्ध प्राणी हा पुत्र !, हा पौत्र ! इस प्रकार पुत्र और पौत्रों को पुकारते हुए, हाय-हाय इस प्रकार वलाप करते हुए पश्चाताप की ज्वाला से जलता रहता है। वह वचार करता है क महान पुण्य के संबंध से मनुष्य-जन्म प्राप्त होता है, उसे प्राप्त कर भी मैंने धर्माचरण नहीं कया, यह मैंने क्या कया। मैंने दान दिया नहीं, अग्नि में हवन कया नहीं, तपस्या की नहीं, देवताओं की भी पूजा की नहीं, व ध- वधान से तीर्थ सेवा की नहीं, अत: हे जीव! जो तुमने कया है, उसी का फल भोगों।

हे देही ! तुमने ब्राह्मणों की पूजा की नहीं, देव नदी गंगा का सहारा लया नहीं, सत्पुरुषों की सेवा की नहीं, कभी भी दूसरे का उपकार कया नहीं, इस लए हे जीव ! जो